परिशिष्ठ 8

(परमेश्वर)
परमेश्वर का स्वभाव व परमेश्वर का पुत्र

यह अतिरिक्त शिक्षा लोगों की परमेश्वर के स्वभाव व परमेश्वर के पुत्र को और भी अधिक गहराई से समझने में सहायता करने के लिए है। कोष्ठक में दिये गये बाइबल अनुच्छेद को पढ़ें।

मसीही उस परमेश्वर पर विश्वास करते हैं जिसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया है और वह कोई 'देवता' नहीं हैं। वह सर्वश्रेष्ठ और तेजस्वी परमेश्वर है। मसीही एक परमेश्वर पर विश्वास करते हैं अर्थात जो ईश्वरीय स्वभाव को धारण करने वाला ईश्वरीय जीव है जिसने अपने आपको मानव जाति पर प्रगट किया है (व्यवसथा विवरण 6:4)। परमेश्वर कभी अपनी सृष्टि, अपने लोगों और इतिहास में जो कुछ उसके लोगों के साथ होता है उनसे दूर नहीं रहता। उसने अपने आपको अपनी ही बनायी सृष्टि और मानवीय इतिहास में प्रगट किया है।

---

1. परमेश्वर का स्वभाव अथाह गहरा है।

बाइबल में अपने आपको प्रगट करने वाला परमेश्वर सर्वोपरी व सर्वश्रेष्ठ है। वह सर्वश्रेष्ठ व तेजस्वी है। बाइबल में खुद को प्रगट करने वाला परमेश्वर आत्मा है(मनुष्यों के समान देहधारी नहीं)वह सर्वव्यापी(सब जगह मौजूद) सर्वज्ञानी (सब कुछ जानने वाला) सर्वशक्तिमान है(सबसे ज़्यादा शक्तिशाली) है।

(1) बाइबल का परमेश्वर अथाह व अविश्वसनीय है।

बाइबल में प्रगट परमेश्वर की थाह नापी नहीं जा सकती (अय्यूब 11:7–8; 1 तीमुथियुस 6:15–16)। कोई भी धार्मिक जन, विद्वान या वैज्ञानिक परमेश्वर के स्वभाव को परिभाषित नहीं कर सकते। जब तक परमेश्वर स्वयं अपने आप को हम पर प्रगट न करें हम यह तक नहीं जान सकते कि कोई परमेश्वर है और कभी उसका स्वभाव नहीं समझ सकते है।

परन्तु परमेश्वर चाहते हैं कि हम उसे जानें। इसलिए उसने अपने आप को हम पर प्रगट किया है कि हम उसे जान सकें। लेकिन हम परमेश्वर को उसी हद तक जान सकते हैं जिस हद तक उसने अपने आप को अपनी प्रकृति में प्रगट किया है: पहले परमेश्वर का स्वभाव हमारे लिए एक रहस्य था। हम परमेश्वर के बारे में केवल वही बातें बोल सकते हैं जो परमेश्वर ने बाइबल में खुद व्यक्त की हैं।

(2) बाइबल का परमेश्वर आत्मा और अदृश्य है।

जिस परमेश्वर ने अपने आपको बाइबल में प्रगट किया है वह आत्मा है(यूहन्ना 4:24)। साधारण लोगों परमेश्वर को अपनी प्राकृतिक आंखों से नहीं देख सकते(यूहन्ना 1:18)।

परन्तु परमेश्वर चाहते हैं कि हम उसके स्वरूप को निहारने पाएं। इसलिए ही उसने अपने आप को प्रत्यक्ष रूप में हम पर अपने आपको प्रगट किया है ताकि हम उसे देख सकें। बिना अपने स्वभाव को अलग किये हुए उसने एक मनुष्य का रूप धारण किया और मानवीय इतिहास में यीशु मसीह के रूप में अपनी ही सृष्टि के बीच कदम रख दिया (यूहन्ना 1:1,14,18)। यीशु मसीह अप्रत्यक्ष परमेश्वर का प्रत्यक्ष रूप है(कुलुस्सियों 1:15)। परमेश्वर की सारी परिपूर्णता यीशु मसीह की देह में वास करती है (कुलुस्सियों 1:19; 2:9)। इसलिए यीशु कह सके, ''जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देख लिया है''(यूहन्ना 14:9)।

(3) बाइबल में प्रगट परमेश्वर अगम्य ज्योति और पहँच से परे है।

बाइबल में अपने आप को प्रगट करने वाला परमेश्वर पहुँच से परे है (1 तीमुथियुस 6:16)। मनुष्य अपने तरीके,अपनी शक्ति व अपने ज्ञान से परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकता। लोगों व्यवस्था को मानने, भले काम करने या धार्मिक कामों को करने के द्वारा परमेश्वर के पास नहीं पहुँच सकता।

लेकिन परमेश्वर चाहता है कि हम उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनायें। इसलिए वह हमारे पास आया! हम परमेश्वर के साथ व्यक्गित सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं, लेकिन कोई सीढ़ी चढ़ने के द्वारा नहीं लेकिन केवल यीशु मसीह के रूप में इस धरती पर आने के द्वारा(और मसीह की आत्मा के द्वारा)।

---

2. परमेश्वर ने अपने आप को इसलिए प्रगट किया ताकि लोग उसे जान सकें।

हालांकि परमेश्वर का स्वभाव अथाह है, फिर भी परमेश्वर ने अपने आपको इसलिए प्रगट किया है कि लोग उसे जान सकें।

(1) परमेश्वर ने अपने आप को सृष्टि में होकर प्रगट किया है

परमेश्वर ने मनुष्य पर प्रगट किया कि वह विद्यमान है, कि वह पौराणिक व शक्तिशाली (भजन 19:1–7;रोमियों 1:19–20) और वह आग में और परमेश्वर के स्वर्गदूत के रूप में होकर भी प्रगट हो सकता है (निर्गमन 3:2–4; 19:18; व्यवस्थाविवरण 4:12:24)।

सृष्टि परमेश्वर की सच्चाई, उपस्थिति, शक्ति,सुन्दरता ओर क्रमबद्धता को प्रस्तुत करती है।

(2) परमेश्वर ने अपने आप को मनुष्य के हृदय में प्रगट किया है

परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को हर एक मनुष्य के हृदय की पटियाओं पर लिखकर प्रगट किया है कि वह गलत बातों से नफरत करता और उचित बातों से प्रेम करता है और उसने मनुष्य को विवेक भी दिया जो उस पर दोष लगाता या निर्दोष ठहराता है (रोमियों 2:14–15;यशायाह 5:20)

मनुष्य का मन इस वास्तविकता को प्रगट करता है कि परमेश्वर का नैतिक आधार है।

(3) परमेश्वर ने आकाशवाणियों के द्वारा अपने आप को प्रगट किया।

परमेश्वर ने न केवल भविष्यद्वक्ताओं से बातें करने के लिए स्वर्गदूतों को ही नहीं भेजा, बल्कि परमेश्वर ने अपने दास मूसा नबी से (निर्गमन 3:4–6;19:19; गिनती 7:89), इस्राएल की मण्डली से (व्यवस्थाविवरण 4:12,32–36; 5:22–26),एलिय्याह भविष्यद्वक्ता (1राजा 19:11–12) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (मत्ती 3:13–17) और यीशु के तीन चेलों (मत्ती 17:5) से खुद बातचीत की। पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति–भाँति से भविष्यद्ववक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में (नये नियम के दिनों में) हम से अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा बातें की (इब्रानियों)। परमेश्वर के वचन बाइबल में लिखे हुए हैं (2 तीमुथीयुस 3:16)। सारे लोग केवल इन वचनों के द्वारा ही जीवित रह सकते हैं(मत्ती 4:4)।

बाइबल में लिखे हुए वचन परमेश्वर की इच्छा,उसकी योजनाओं और उसके विचारों को प्रगट करते हैं।

(4) परमेश्वर ने अपने आपको उसके कामों के द्वारा प्रदर्शित व प्रगट किया है।

परमेश्वर ने अपने सृष्टि के बीच तथा मानव इतिहास में अद्भुत चिन्ह व चमत्कारों द्वारा, परीक्षाओं व युद्व, अपने सामर्थी हाथों व फैलाई हुई बाहों के द्वारा महान तथा भययोग्य कार्यों को किया है(व्यवस्था विवरण 4:34)। जब परमेश्वर काम करना प्रारम्भ करें तो कोई उसके काम को रोक नहीं सकता है (यशायाह 43:13)! बाइबल में न केवल उसकी बातों को बल्कि उसके कामों को भी लिखा गया है।

बाइबल के काम परमेश्वर के उद्धार तथा न्याय के कामों को व्यक्त करते हैं।

(5)परमेश्वर ने अपने आपको रूपान्तरित जीवनों के द्वारा प्रगट व प्रदर्शित किया है।

बाइबल में दिये गये परमेश्वर के वचन व काम उन लोगों के जीवन को रूपान्तरित करते हैं जो उसकी बातों व कामों पर विश्वास करते हैं। उदाहरण के तौर पर पौलुस विश्वासी बनने से पहले विश्वासियों से नफरत करता तथा उनको सताया करता था। तब एक दिन यीशु ने उस पर प्रगट होकर उसके हृदय को बदल दिया। यीशु ने उसके पापों को क्षमा करके उसे उद्धार दिया। पौलुस का जीवन बदल गया और वह नये तरीके से जीवन को जीने लगा। किसने पौलुस के जीवन को इस तरह से बदल दिया? पौलुस अपनी गवाही में कहता है कि यीशु मसीह द्वारा परमेश्वर ने उसके जीवन को बदला(1 तीमुथियुस 1:15–16)। लाखों करोड़ों मसीही लोग गवाही देते हैं कि किस प्रकार से उनके जीवन बदल गये हैं। इन सच्चे मसीहियों के पीछे सच्चा परमेश्वर है। उस ने इन्हें रूपान्तरित किया और अब भी रूपान्तरित कर रहा है। जब आप किसी सच्चे मसीही को देखते हैं और उनकी गवाहियों को सुनते हैं, तब आपको उस परमेश्वर के बारे में पता चलता है जो लोगों के जीवनों को परिवर्तित कर देता है।

मसीहियों के रूपान्तरित जीवन परमेश्वर के उद्धार की योजना को प्रगट करते हैं।

(6) परमेश्वर ने अपने आपको एक मनुष्य अर्थात यीशु मसीह में होकर प्रदर्शित व प्रगट किया हैं।

परमेश्वर आत्मा है(यूहन्ना 4:24)और इसी कारण अदृश्य भी। फिर भी, परमेश्वर ने अपने आप को प्रत्यक्ष रूप में यीशु मसीह के मानवीय शरीर में होकर प्रगट किया। अपने ईश्वरीय स्वभाव को त्यागे बिना ही परमेश्वर ने यीशु मसीह की देह में होकर अपनी सृष्टि और मानव संसार में कदम रखा (लूका 1:26–37; यूहन्ना 1:1,14,18; फिलिप्पियों 2:5–8;कुलुस्सियों 1:15,19; 2:9)। एक मनुष्य अर्थात यीशु मसीह परमेश्वर नहीं बना था परन्तु एकमात्र परमेश्वर मनुष्य अर्थात यीशु मसीह बना (यूहन्ना 1:1,14)। यीशु मसीह ''परमेश्वर की महिमा को तेज'(परमेश्वर की ईश्वरीयता तथा ईश्वरीय स्वभाव की विशेषता है)''परमेश्वर के अस्तित्व का सटीक प्रतिनिधित्व है''(परमेश्वर के अप्रत्यक्ष पहिचान की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है)(इब्रानियों 1:1–3)। इसलिए यीशु ने कहा ''जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देख लिया''(यूहन्ना 14:9)।

यीशु मसीह ने परमेश्वर के कामों,वचनों,चरित्र, व्यक्तित्व और ईश्वरीय पहिचान को व्यक्त किया है।

कई लोगों का कहना है कि परमेश्वर कभी मनुष्य का रूप धारण नहीं कर सकते। परन्तु पुराने नियम में लिखा है कि,'परमेश्वर का स्वर्गदूत झाड़ी में जलती हुई आग के रूप में प्रगट हुआ....और परमेश्वर ने उस झाड़ी में से होकर 'पुकारा मूसा!मूसा!'(निर्गमन 3:2–4)। यदि परमेश्वर किसी झाड़ी के बीच में प्रगट हो सकते हैं तो वह निश्चय ही शुद्ध मानवीय देह में वास कर सकते हैं।

(7) परमेश्वर ने अपने आप को पवित्र आत्मा द्वारा प्रगट किया है।

परमेश्वर का आत्मा, मसीही का आत्मा,या 'हम में मसीह' पवित्र आत्मा कहलाता है(रोमियों 8:9–10)। यीशु मसीह के स्वर्ग में उठा लिये जाने तथा सिंहासन पर बैठने के बाद वह पवित्र आत्मा के रूप में (एक ऐसा आयाम जो कल्पना सके परे था) संसार के गैर मसीहियों और मसीहियों के हृदयों में काम करने के लिए वापस आया(यूहन्ना 16:8–10)। पवित्र आत्मा मसीहियों के हृदय और देह (1 कुरिन्थियों 6:19–20) तथा कसीसिया (इफिसियों 2:22)में वास करता है।

पवित्र आत्मा अपने लोगों के जीवन में परमेश्वर की सामर्थी उपस्थिति को व्यक्त करता है।

---

3. बाइबल में 'पुत्र' की अभिव्यक्ति

जिस प्रकार से बाइबल में ''परमेश्वर का पुत्र' भाव का इस्तेमाल किया गया है उसे गलत नहीं समझा जाना चाहिए। मूल भाषा में(इब्रानी और अरबी) यह भाव 'का पुत्र' भलि भाँति परिचित है जिसका अर्थ शाब्दिक या प्रतीकात्मक है।
बाइबल तीन प्रकार के 'पुत्रों' के बारे में बात करती है और इन तीनों में अन्तर समझना ज़रूरी है:
(1) वास्तविक शारीरिक पुत्र (2) आत्मिक पुत्र का प्रतीक(3) तात्विक या सत्तामूलक पुत्र

---

4. यीशु मसीह परमेश्वर का शारीरिक पुत्र नहीं है।

मसीहियों के सन्दर्भ में शारीरिक पुत्र।

बाइबल में 'पुत्र' भाव कई बार शारीरिक अवतरण को दर्शाता है: अर्थात शारीरिक पुत्र। यूहन्ना 3:6में लिखा है, ''जो शरीर से जन्मा है व शरीर है'। शारीरिक माता पिता से शारीरिक बच्चे का जन्म होता है। उसके पुत्र होने की दशा का एक आरम्भ था जब वह अपनी माता के गर्भ में पड़ा।

मसीह के सम्बन्ध में शारीरिक पुत्रत्व।

लेकिन यीशु के साथ में मामला यह नहीं है। यीशु मसीह को कभी उत्पन्न नहीं किया गया। *उसकी विद्यमान अवस्था का कभी कोई प्रारम्भ नहीं था।* यीशु मसीह परमेश्वर का शारीरिक पुत्र नहीं है। 'परमेश्वर का पुत्र' का अर्थ यीशु मसीह के परमेश्वर का शारीरिक पुत्र होने से नहीं था, जिस तरह से बहुत से दूसरे झूठे धर्म बताते हैं कि मसीही लोग शिक्षा देते हैं।

यीशु मसीह की अपना शारीरिक प्रवृति थी। उसके ईश्वरीय स्वभाव के अनुसार यीशु मसीह अनन्त काल से विद्यमान था(यूहन्ना 1:1)। लेकिन उसके मानवीय स्वभाव के अनुसार वह अपनी माता अर्थात कुंवारी मरियम के द्वारा निश्चित काल में जन्मा(यूहन्ना 1:14)। लेकिन उसके जन्म में उसके पिता माने जाने वाले युसुफ का कोई योगदान नहीं था बल्कि पवित्र आत्मा ने मरियम पर छाया की और यीशु का जन्म हुआ(लूका 1:35)। संसार में दूसरे लोगों के विपरीत, यीशु मसीह का कोई शारीरिक पिता नहीं था! और संसार में सारे लोगों के बिल्कुल विपरीत यीशु पूरी तरह से पाप रहित थे(2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 4:15)।

परमेश्वर पिता और पवित्र आत्मा की कोई देह नहीं है। हम यीशु की शारीरिक देह को 'परमेश्वर की देह' नहीं कहते क्योंकि परमेश्वर की कोई देह नहीं है। और न ही परमेश्वर का स्त्री के साथ मनुष्य के समान कोई रिश्ता है। पवित्र

आत्मा का भी अपना कोई शरीर नहीं है। उसने कुंवारी मरियम की कोख में यीशु की देह का र्निमाण किया (लूका 1:35)। लेकिन हम मरियम को परमेश्वर की माता नहीं बोलते, क्योंकि वह केवल यीशु मसीह के मानवीय स्वभाव की मां थी।

समय आने पर यीशु ने मानवीय स्वभाव को धारण कर लिया। अनन्तता से यीशु मसीह परमेश्वर है। सारी अनन्तता से ही यीशु मसीह 'परमेश्वर के पुत्र'के ईश्वरीय स्वभाव को धारण करे हुए है। लेकिन इतिहास के एक विशेष काल में उसने कुंवारी मरियम के द्वारा मनुष्य का रूप धारण करके अपनी ही सृजी हुई सृष्टि के बीच में कदम रखा। उसके मानवीय रूप में ही उसने मानव जाति के पापों का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस पर अपने प्राण दिये। उसकी मानवीय देह में ही उसने मृतकों में से जी उठकर हमें हमारी *मृत्यु से पहले* रूपान्तरित जीवन की तथा *हमारी मृत्यु के पश्चात* पुनरूत्थित देह की गारन्टी(जमानत) दी है।

लोगों के लिए यीशु मसीह का ईश्वरीय व मानवीय स्वभाव के बीच सम्बन्ध हमेशा एक रहस्य ही बना रहेगा। यह रिश्ता बिल्कुल अनोखा हैः वह मनुष्य का रूप धारण करने वाला परमेश्वर है (यशायाह 9:6)। यीशु मसीह को छोड़ और कोई मानवीय इतिहास में 'इमानुएल'(परमेश्वर हमारे साथ) नहीं है(मत्ती 1:23)।

---

5. यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मिक पुत्र नहीं है।

मसीहियों के सन्दर्भ में आत्मिक पुत्रत्व।

बाइबल में 'पुत्र' कहा जाना कई बार *आत्मिक* अवतरण को प्रदर्शित करता हैः एक आत्मिक पुत्र। यूहन्ना 3:6 में लिखा है,"जो शरीर से जन्मा है व शरीर है' ।बाइबल आत्मिक व शारीरिक पुत्र के बीच में स्पष्ट फरक को प्रदर्शित करती है।

नया जन्म प्राप्त करने के बाद मसीही जन एक आत्मिक सन्तान बन जाता है। नया जन्म पाने से *पहले* बच्चा अपने शारीरिक माता पिता का शारीरिक बच्चा होता है। लेकिन पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म प्राप्त करने के *बाद* वह स्वर्गीय पिता की आत्मिक सन्तान भी बन जाता है(यूहन्ना 1:12–13)। उसका पहले से मृतक आत्मा (इफिसियों 1:5) जिला दिया जाता है (इफिसियों 2:4–5)। वह यीशु मसीह को स्वीकार करने के द्वारा नया जन्म प्राप्त करता है(यूहन्ना 3:3–8)! नये जन्म के द्वारा ही वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है(यूहन्ना 1:12–13)

जगत की उत्पत्ति से पहले ही मसीही जन को पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म पाने पर (रोमियों 8:15)परमेश्वर द्वारा लेपालक आत्मिक पुत्र होने के लिए नियोजित किया गया है (इफिसियों 1:5),उसी समय वास्तव में उसे परमेश्वर द्वारा अपने आत्मिक पुत्र के रूप में गोद ले लिया जाता है। और वह अपने गोद लिये हुए आत्मिक पुत्र के सौभाग्य व अधिकार का पूर्ण रूप से तभी आनन्द उठा सकता है जब वह अपने नश्वर शरीर को त्याग देता है(रोमियों 8:23)।

मसीही केवल उस आत्मिक स्वभाव को धारण करता है जिसमें कुछ ईश्वरीय विशेषताएं होती हैं। जब मनुष्य का मानवीय स्वभाव उसे उसके माता पिता से प्राप्त होता, लेकिन उसका आत्मिक स्वभाव उसे पवित्र आत्मा के द्वारा प्राप्त होता है। हालाकि मनुष्य में ईश्वरीय स्वभाव नहीं होता लेकिन वह आत्मि स्वभाव प्राप्त व धारण करने के द्वारा कुछ ईश्वरीय गुणों का भागीदार बन जाता है, जैसे ज्ञान, भक्ति और प्रेम (2 पतरस 1:3–9)। उसका आत्मिक स्वभाव अब दोष, लज्जा, शक्ति व पाप द्वारा होने का गुलाम नहीं है परन्तु अधिकाई से मसीह की समानता में बढ़ने के लिए स्वतन्त्र हो गया है। और उसका आत्मिक स्वभाव अब शैतान का गुलाम नहीं है, वह अब शैतान की इच्छा को अपने जीवन में पूरा करने के लिए मज़बूर नहीं है (2 तीमुथीयुस 2:26)। वह अब परमेश्वर की सन्तान बन गया है, और अव उन कामों को करता है जो परमेश्वर की दृष्टि में भले हैं तथा परमेश्वर व भाईयों से प्रेम करता है(1 यूहन्ना 3:10)।

इतिहास में मसीहियों के आत्मिक पुत्रत्व का प्रारम्भ है। उसका आत्मिक पुत्रत्व उसके नये जन्म पाने से प्रारम्भ होता है।

मसीह के सन्दर्भ में आत्मिक पुत्रत्व।

लेकिन यीशु के मामले में ऐसा नहीं है। यीशु मसीह का कभी नया जन्म नहीं हुआ। *उसके पुत्रत्व की कोई शुरूआत नहीं है! यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मिक पुत्र नहीं है।* वह परमेश्वर का धार्मिक पुत्र भी नहीं है।

यीशु मसीह अनन्तता से अनन्ता तक ईश्वरीय स्वभाव का धारक है। अनन्तता से ही वह अपने स्वभाव में ही परमेश्वर का पुत्र है। अनन्तता से ही वह ईश्वरीयता को धारण किये हुए है। उसने किसी समय पर नया जन्म प्राप्त नहीं किया जैसा कि मसीही लोग प्राप्त करते हैं, परन्तु वह अनन्तता से ही आत्मिकता या ईश्वरीयता का धारक है। वह प्रारम्भ से ही परमेश्वर का पुत्र है, क्योंकि उसमें वे सारे गुण विद्यमान हैं जो परमेश्वर में पाये जाते हैं। मानवीय रूप धारण करने से पहले से ही वह परमेश्वर का पुत्र है(भजन 2:6–7; यूहन्ना 3:16)।

यीशु मसीह अनन्तता से अनन्ता तक परमेश्वर का पुत्र है। यीशु मसीह उसके जन्म लेने के द्वारा परमेश्वर का पुत्र नहीं बना है(मानवीय जन्म के द्वारा), लेकिन अनन्त परमेश्वर के रूप में उसने मानवीय इतिहास में कुवारी मरियम के द्वारा

मानवीय रूप धारण किया(लूका 1:26–37)। वह मानवीय रूप धारण करने पर भी परमेश्वर का पुत्र है, क्योंकि उसके बपतिस्मा के दौरान परमेश्वर ने यह नहीं कहा,'तू अब मेरा पुत्र बन गया है'', परन्तु परमेश्वर ने कहा ''तू मेरा प्रिय पुत्र है, जिसे मैं प्रेम करता हूँ; जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ''(मरकुस 1:11)। इसके अतिरिक्त यीशु ने स्वयं कहा कि वह परमेश्वर का पुत्र है(मत्ती 11:27; 21:37:–39 और 27:43)। प्रेरित यूहन्ना कहता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 3:35–36; 5:19–30)। और प्रेरित पौलुस कहता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है(रोमियों 1:3–4,9;5:10;8:3)।

यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर की सदृश्य तस्वीर है। यीशु मसीह अनन्तता से अनन्तता तक परमेश्वर का पुत्र है, परन्तु समय आने पर वह मनुष्यों पर अपने ईश्वरीय स्वभाव को प्रगट करता है। वह परमेश्वर की महिमा का सदृश्य तेज है (परमेश्वर का अनीवार्य गुण) तथा परमेश्वर के अदृश्य ईश्वरीय स्वभाव(कुलुस्सियों 1515, 19;2:9) की छाप (प्रभाव, प्रतिनिधित्व) है। यह उन शब्दों का भी अर्थ है अर्थात ''परमेश्वर का इकलौता पुत्र, जो परमेश्वर के साथ है, जिसने उसको (परमेश्वर) को प्रगट (प्रदर्शित व परमेश्वर का व्याख्यान) किया है।(यूहन्ना 1:18; मत्ती 11:27)।

यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मा है। ध्यान दें अन्य वचन यीशु मसीह के परमेश्वर का आत्मा होने के बारे में क्या कहते हैं। यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मा है और उसने मानव रूप धारण करने से पहले पुराने नियम के समय में भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें की(1 पतरस 1:10–12; 2 पतरस 1:19 –21)। यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मा है जिसने कुंवारी मरियम से जन्म लेते समय मानवता को अपने ऊपर धारण कर लिया (लूका 1:26–37)। यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मा है जिसने धरती पर अपनी सेवकाई के दौरान लोगों को उद्धार दिया और चंगा किया(लूका 4:18–19)। यीशु मसीह स्वर्ग में अपनी सेवकाई के दौरान परमेश्वर का आत्मा हैः जब गैर मसीही लोग बाइबल को समझने का प्रयास करते हैं (2 कुरिन्थियों 3:14–18) तो वह ही उनकी आंखों,मन और ह्रदय पर से पटटी को हटा देता है, और पिन्तेकुस्त के बाद से वह विश्वासियों में ही रहता है(रोमियों 8:9–10; गलातियों 4:6–7)।

यीशु मसीह परमेश्वर का वचन है। ध्यान दें कि धर्मशास्त्र यीशु के परमेश्वर का वचन होने के बारे में क्या कहता है। यीशु मसीह परमेश्वर का वचन है जो अनन्तता से परमेश्वर है(यूहन्ना 1:1)। वह हर चीज का सृजनहार है(यूहन्ना 1:3, तथा उत्पत्ति 1:1–3;भजन 33:6)। वह परमेश्वर का वचन है जिसने मानवीय इतिहास में मानवीय स्वभाव को धारण किया(यूहन्ना 1:14–18)। वह परमेश्वर का वचन है जिसके पास मानवीय इतिहास के लिए परमेश्वर की इच्छा को प्रगट करने का अन्तिम प्रकाशन था। यीशु मसीह के बाद किसी भी भविष्यद्वक्ता के द्वारा कोई प्रकाशन प्राप्त नहीं होगा (इब्रानियों 1:1–2)! वह वो परमेश्वर का वचन है जिसके पास जगत के सारे लोगों के न्याय के लिए अन्तिम वचन होगा(प्रकाशितवाक्य 19:13–16)।

6. यीशु मसीह परमेश्वर का प्रतीकात्मक पुत्र नहीं है।

मसीहियों के सन्दर्भ में प्रतीकात्मक पुत्रत्व।

बाइबल में दिये ''पुत्र' का कई बार प्रतीकात्मक मतलब होता है : एक प्रतीकात्मक या काल्पनिक पुत्र। *किसी के साथ में* 'पुत्र' *जुड़ने पर दर्शाता है* कि उसका किसी के साथ में गहरा सम्बन्ध है और वह उस व्यक्ति की विशेषताओं को अपने ऊपर धारण करने के लिए आया है। उदाहरण के लिए, अभिव्यक्ति 'ज्योति की सन्तान''(लूका 16:8) उन मसीहियों को प्रगट करती है जो ज्योति अर्थात यीशु मसीह के नज़दीक खड़े हैं, और मसीह की अनोखी विशेषताओं को ग्रहण करते हैं जैसे उसकी पवित्रता, धार्मिकता, दया, प्रेम, बुद्धि और शुद्धता इत्यादि।

फिर भी, मसीही जन का 'ज्योति' के रूप में प्रतीकात्मक पुत्रत्व संसार में तब प्रारम्भ हो जाता है जब वह नया जन्म पाकर ज्योति की विशेषताओं के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करने लगता है(मत्ती 5:14)।

मसीह के सन्दर्भ में प्रतीकात्मक पुत्रत्व।

लेकिन यीशु के साथ में ऐसा मामला नहीं है। *परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु मसीह का पुत्रत्व कभी काल्पनिक या प्रतीकात्मक नहीं था।*

यीशु मसीह परमेश्वर को प्रस्तुत करने वाला कोई चिन्ह नहीं वरन वह स्वयं परमेश्वर है। वह बस परमेश्वर की नज़दीकी में खड़ा या परमेश्वर की गुणों को धारण करने वाला कोई जन नहीं है। वह परमेश्वर है। वह ज्याति का प्रतीक नहीं है,वह स्वयं ज्योति है (यूहन्ना 1:4–9; 8:12)। वह परमेश्वर को प्रगट करने वाला प्रतिनिधी नहीं वरन, वह वास्तविकता है, वह खुद परमेश्वर है(रोमियों 9:5; कुलुस्सियों 2:9; तीतुस 2:13; इब्रानियों 1:3; 2:8–9;1यूहन्ना 5:20)!

यीशु मसीह की कोई शुरूआत व कोई अन्त नहीं है। इतिहास के किसी भी पन्ने पर यीशु मसीह कहीं कोई 'वास्तविकता'' नहीं बनें। वह अनन्तकाल से ही वास्तविकता है(यूहन्ना 1:1)। *उसकी ईश्वरीय पुत्रत्व(वास्तविकता) की कोई शुरूआत या कोई अन्त नहीं है* (प्रकाशितवाक्य 1:8; 2:8;22:12–13)!

यीशु मसीह प्रतीकात्मक परमेश्वर का पुत्र नहीं है।''परमेश्वर के ''जुड़े हुए वाक्य या भाव शाब्दिक नहीं बल्कि प्रतीकात्मक थे। अभिव्यक्तियां जैसे ''परमेश्वर के हाथ' या 'परमेश्वर के कान'(यशायाह 59:1–2) का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के शारीरिक हाथ या कान हैं, परन्तु इसका अर्थ है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है और हमारा उद्धार करता है। 'परमेश्वर की आखें' का मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर की शारीरिक आंखें हैं, परन्तु इसका अर्थ है कि परमेश्वर हर एक व्यक्ति और हर चीज़ को देखता है (इब्रानियों 4:13)। इसी प्रकार ''परमेश्वर का पुत्र' भी परमेश्वर के शारीरिक पुत्र होने को नहीं वरन अभौतिक व सत्तापूरक 'परमेश्वर के पुत्र 'को दर्शाता है।

7.यीशु मसीह को उसकी मृत्यु और जी उठने के बाद ही परमेश्वर के पुत्र के रूप में नियुक्त(घोषित) या स्वीकार किया गया है।

(1) यीशु मसीह अपने प्रथम आगमन से पूर्व ही परमेश्वर का पुत्र है।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा परमेश्वर ने कहा,' *मैं उसका पिता होऊंगा और वह मेरा पुत्र होगा'*(2शमुएल 7:15;इब्रानियों 1:5)। जबकि 2 शमुएल 7:12–16 का लेखक दाऊद के पुत्र के बारे में बोलता है, वहीं दूसरी ओर 2 इतिहास 17:11–14 में लेखक कहता है कि ये वचन 'दाऊद के पुत्र में'' केवल उसी में ये वचन पूरे होंगे। 'उसका राज्य सदा तक स्थिर रहेगा'' (1 इतिहास 17:14)। स्वर्गदूत जिब्राएल के द्वारा मरियम को बोले गये शब्द पुष्टि करते हैं कि यह भविष्यद्वाणी यीशु मसीह में पूरी होगी:'' और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद को सिंहासन उस को देगा।और वह दाऊद के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होग(लूका 1:32–33)।

(2)यीशु मसीह उसके जन्म पर परमेश्वर का पुत्र था।

यीशु मसीह के जन्म के समय जिब्राएल स्वर्गदूत ने मरियम से कहा: वह महान होगा और सर्वशक्तिमान परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा''(लूका 1:32)। वह इस उपाधि को स्वर्ग में अपने राजकीय अभिषेक के समय प्राप्त करेगा(लूका 1:32–33)। केवल उसके राज्याभिषेक के दौरान ही मानव जगत में यह स्पष्ट हुआ है कि यीशु मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है, जिसने परमेश्वर की परिपूर्णता को धारण कर रखा है।

(3) पानी का बपतिस्मा लेते समय यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र था।

जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा यीशु मसीह का बपतिस्मा हुआ, तब आकाशवाणी हुई'' तू मेरा प्रिय पुत्र है,जिससे मैं प्रेम करता हूँ, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ'' (मरकुस 1:11)।

(4) मृतकों में से जी उठने से पहले व बाद में वह परमेश्वर का पुत्र है।

पौलुस '' परमेश्वर के पुत्र के सन्दर्भ में .....सुसमाचार'' प्रचार करता है (रोमियों 1:1–3)। वह मनुष्य के पुत्र के स्वभाव के बारे में बात करते हुए यीशु के ''शरीर के भाव' व यीशु के ''आत्मा के भाव'' के अन्तर को प्रगट करती है(रोमियों 1:3–4)। यीशु मसीह की देह या मानवीय स्वभाव उसके जन्म के बाद अर्थात दाऊद की वंशावली के बाद 'कमजोरियों को प्रगट करता है: वह थका, उसे भूक और प्यास लगी, वह चिन्तित हुआ व परीक्षा में पड़ा,वह सच में मज़बूत चरित्र का था। यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने के बाद उसका स्वभाव पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा सामर्थ से परिपूर्ण था: उसकी देह प्रकृति के नियमों के अधीन नहीं, वरन पूरी तरह से पवित्र आत्मा के द्वारा नियन्त्रित थी। वह बन्द कब्र में से कपड़े वहा छोड़कर बाहर भीतर आ जा सका। वह प्रगट व गायब हो सका। अन्त में वह स्वर्ग पर चढ़ गया और परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ जा बैठा।

वचन: ''और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है (रोमियों 1:4) का मतलब यह नहीं है कि जब वह मरे हुओं में से जी उठा तभी वह परमेश्वर का पुत्र ठहरा। यीशु मसीह के अनन्ता से परमेश्वर होन के कारण, सारा जोर ''सामर्थ' शब्दा पर पड़ता है जिसका अर्थ है ''सामर्थ से परिपूर्ण''। उसके जन्म के बाद उसकी सारी सामर्थ्य उसकी महिमा में छुपी हुई थी इस कारण वह इसे देख नहीं पा रहा था। लेकिन उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद स्वर्ग और पृथ्वी पर पूर्ण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र धोषित कर दिया गया(मत्ती 28:18;यूहन्ना 13:3; इफिसियों 1:20–22),जो पुनरूत्थान से पहले उसके शारीरिक भाव से परे था।यद्यपि यीशु मसीह अनन्तकाल से अनन्तकाल तक परमेश्वर के पुत्र हैं, उन्होने अपनी सामर्थ्य का इस्तेमाल करना अपने पुनरूत्थान, उठा लिये जाने और अपने राज्याभिषेक के दौरान करना प्रारम्भ कर दिया। उसकी मृत्यु व पुनरूत्थान के समय आज्ञाकारिता को साबित करने के द्वारा, सारी दुनिया में मसीही कलीसियाओं का फैलाव होने लगा (यूहन्ना 12:31–32; रोमियों 1:5;16:25–26)

(5) स्वर्ग में अपने राज्याभिषेक के समय भी यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है

इब्रानियों की पत्री में परमेश्वर कहते हैं कि :"तू मेरा पुत्र है; आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ हैं''(शाब्दिक अर्थ: ''आज मैं ने तुझे जन्म दिया है''(भजन 2:7; इब्रानियों 1:5)। हालांकि स्वर्गदूतों को सामुहिक तौर पर 'परमेश्वर के पुत्र'' कहकर

सम्बोधित किया गया है (बेन आ –एलोहीम) (उत्पत्ति 6:2,4; अय्यूब 1:6;2:1),लेकिन कभी किसी स्वर्गदूत को परमेश्वर का पुत्र कहकर सम्बोधित नहीं किया गया–यह एक ऐसा सम्बोधन है जो उसको सबसे अलग पहिचान देता है। भजन संहिता 2:7–9 सम्भवतः यहूदा के राजा की उपासना को ध्यान में रखते हुए लिखा गया, लेकिन अगर हम पूरे भजन 2 को देखते हैं तो वह राजा–मसीह के बारे में भविष्यवाणी है, जो राजा दाऊद की वंश में पैदा होगा (यिर्मयाह 23:5–6; यहेजकेल 37:24–28)। नया नियम भजन 2 को मसीह से सम्बन्धित भजन मानता है (प्रेरितों 4:25–26; 13:33)। भजन 2 में मसीह (परमेश्वर का अभिषिक्त) इन वचनों को अपने विश्वास के आधार के रूप में इस्तेमाल करता है जब इस धरती का राजा और संसार की शक्तियां उसके खिलाफ जमा होती है(भजन 2:2)।

परमेश्वर का वचनः ''आज तू मुझसे पैदा हुआ है'' का अर्थ यह नहीं है कि यीशु मसीह अपने जन्म पर ही परमेश्वर के पुत्र बने। इब्रानियों 1 में दिया गया सन्दर्भ दर्शाता है कि 'आज' शब्द यीशु मसीह के पदोन्नति तथा उसके राज्याभिषेक को प्रगट करता है (भजन संहिता 110:4;इब्रानियों 1:13)। अतः उसके पुनरूत्थान, स्वर्ग चले लाने और उसके राज्याभिषेक पर यीशु मसीह को उसकी राजकीय वैभव से सुसज्जित किया गया और उसे ''परमेश्वर का पुत्र' उपाधि दी गयी। यह उपाधि धरती पर सारे लोगों (प्रेरितों 2:36; फिलिप्पियों 2:9–11) और स्वर्ग के सारे स्वर्गदूतों में सर्वश्रेष्ठ पद है(इब्रानियों 1:3–5)। ''परमेश्वर की पुत्र' उपाधि उसकी सच्चाई के बारे में,उसकी पहिचान के बारे में बताती है और यह उस नाम को दर्शाती है जिसके द्वारा उसे पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण व राज्याभिषेक के बाद से जाना जाता है अर्थात उसके अभौतिक, सत्तामूलक, त्रिएकत्व और अनन्त बोध में।

---

(8) यीशु मसीह अभौतिक, सत्तामूलक, त्रिएक और अनन्त बोध में परमेश्वर का पुत्र है।

सत्तामूलक भाव में बाइबल का परमेश्वर यीशु मसीह का पिता है।

'औन्टोलोजी' का अर्थ 'चीज़ों के विद्यमान होने का सिद्धान्त' है। अनन्तता से ही परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र का एक सा ही ईश्वरीय अस्तित्व व स्वभाव रहा है। परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र का रिश्ता कभी भी शारीरिक रिश्ता नहीं रहा है जैसा कि बहुत से झूठे धर्म कहते हैं कि मसीही लोग ऐसी शिक्षा देते हैं। यह हमेशा ही अभौतिक, सत्तामूलक, त्रिएक और अनन्त बोध में आन्तरिक सम्बन्ध रहा है।

बाइबल का परमेश्वर ही ''प्रभु यीशु मसीह का पिता और परमेश्वर है''(1 कुरिन्थियों 1:3; इफिसयों 1:3)। यीशु मसीह ' परमेश्वर का पुत्र, प्रिय, जिससे परमेश्वर प्रसन्न है' है(मत्ती 3:17;17:5)। वह परमेश्वर को एकमात्र 'इकलौता बेटा है'(यूहन्ना 1:18;3:16)। वह 'परमेश्वर का अपना बेटा' है(रोमियों 8:32)। वह 'परमेश्वर का अनन्त पुत्र है'(यूहन्ना 17:5,24)। संसार में पाये जाने वाले दूसरे धर्मों के ''देवता' अभौतिक, सत्तामूलक, त्रिएक और अनन्त बोध में यीशु मसीह के पिता नहीं है, इस कारण वे किसी तरीके से परमेश्वर नहीं हैं। उनकी बाइबल के परमेश्वर से कोई समानता नहीं है। पुराना नियम यीशु मसीह को 'बलवन्त परमेश्वर' तथा 'अनन्त का पिता' कहकर बुलाता है(यशायाह 9:6; 10:20–21)। और नया नियम हमें सिखाता है कि परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र दोनों एक ही हैं(यूहन्ना 10:30)।

मसीही कलीसिया विश्वास व अंगीकार करती है कि केवल एक ही परमेश्वर है, जिसका एक ईश्वरीय अस्तित्व व स्वभाव है और जिसने अपने आपको अपनी सृष्टि और मानवीय इतिहास में परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट किया है(मत्ती 28:19)।

बाइबल का परमेश्वर मसीहियों का पिता है लेकिन सत्तामूलक बोध में नहीं वरन आत्मिक बोध में।

मसीही जन न 'परमेश्वर' हैं और न ही 'परमेश्वर' बनेंगे, वे केवल परमेश्वर की रचना हैं। परमेश्वर पर विश्वास करने से पहले मसीही लोग बाइबल के परमेश्वर के दुश्मन थे(रोमियों 5:10)। लेकिन यीशु मसीह पर विश्वास करने के बाद वे 'परमेश्वर के आत्मिक पुत्र व पुत्री'(इफिसियों1:5) या 'परमेश्वर की आत्मिक सन्तानें '(यूहन्ना 1:12–13) बन गये। परमेश्वर के आत्मिक सन्तानों के रूप में, मसीही लोग बाइबल के परमेश्वर के गुणों को ज्यादा से ज्यादा प्राप्त करते हैं। (इफिसियों 4:24; 2 पतरस 1:4; 1 यूहन्ना 3:1–3)।

बाइबल का परमेश्वर स्वर्ग से सारे मसीहियों पर राज्य करता है, यीशु मसीह के द्वारा अपनी उद्धार की योजना सारे मसीहियों पर पूरा करता है, और पवित्र आत्मा के द्वारा सारे मसीहियों में वास करता है। मसीहियों में एकता केवल बाइबल के परमेश्वर की एकता और ईश्वरीय स्वभाव में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की एकता से ही आ सकती है। मसीही कलीसियाओं के एक बाइबल के एक समान परमेश्वर की आराधना करने के द्वारा, उनके पापों से उद्धार दिलाने के लिए एक उद्धारकर्ता के होने, उनके बीच में समान पवित्र आत्मा के वास करने से, एक ही विश्वास होने से, समान आशा और समान प्रेम होने से प्रगट होती है(इफिसियों 4:3–6)।

---

(9) यीशु मसीह मरियम का शारीरिक पुत्र (उसके मानवीय स्वभाव के अनुसार का) और साथ ही साथ परमेश्वर से उत्पन्न (ईश्वरीय स्वभाव के अनुसार)पुत्र है।

यीशु मसीह की वंशावली सिद्ध करती है कि यीशु मरियम का शारीरिक पुत्र था।

मत्ती की वैध वंशावली। मत्ती ने सुसमाचार खास तौर पर यहूदियों के लिए लिखा, इसलिए वह कानूनी मामलों को लेकर बड़ा ही उत्सुक था।वह अब्राहम से लेकर यीशु तक कानूनी वंशावली का लेखा प्रस्तुत करता है। मत्ती 1:1–12 में यह वंशावली अब्राहम से प्रारम्भ होकर,दाऊद,सुलैमान (नातान नहीं)से जरूब्बाबिल(538 ई.पू जिस समय पर यहूदी लोग बाबुल से लौटकर आये थे) (एज्रा 1:11–2:2)। मत्ती 1:13–16 में वंशावली जरूब्बाबिल से होकर अबीहूद(रेसा से नहीं) से होकर याकूब (हेली नहीं),'युसुफ के पिता, जो मरियम का पति हुआ, जिससे यीशु का जन्म हुआ और जो आगे चलकर मसीह कहलाया''(मत्ती 1:13–16)।याकूब युसुफ का शारीरिक पिता था। युसुफ यीशु का शारीरिक पिता नहीं था, लेकिन कानूनी या वैध पिता था, क्योंकि वह मरियम का वैध पति था। इसलिए मत्ती अन्त में कहता हैः यीशु यहूदियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

यीशु मसीह उसके मानवीय स्वभाव में 'अब्राहम का पुत्र' है(उत्पत्ति 22:18; मत्ती 1:1;प्रेरितों 3:25; गलातियों 3:8,16), 'दाऊद का पुत्र' (2 शमुएल 7:12–16; यशायाह 9:6–7; 11:1; यिर्मयाह 23:5–6; लूका 1:32 प्रकाशितवाक्य 22:16), 'मरियम का पुत्र'(मत्ती1:18;लूका 1:31) था लेकिन वह युसुफ का शारीरिक पुत्र नहीं था।

लूका की वैध वंशावली। लूका ने अपना सुसमाचार अन्यजातियों को ध्यान में रखकर लिखा था इसलिए वह ऐतिहासिक तथ्यों को लेकर बड़ा उत्सुक था(लूका 1:1–4)। वह यीशु की वंशावली को यीशु से आदम और परमेश्वर तक आरोहण क्रम में लिखना प्रारम्भ करता है। लूका 23 में लूका लिखता है किः''यीशु पुत्र था, अतः यहूदियों ने सोचा कि वह हेली से उत्पन्न, युसुफ का पुत्र है''। जैसा नीचे साबित होता है, इसका मतलब सम्भवतः यह रहा होगा,''युसुफ हेली का दामाद था' और हेली मरियम का पिता था और यीशु का नाना था। लूका 3:23–27 में वंशावली युसुफ के बाद हेली(याकूब से नहीं) से होती हुई फिर रेसा (अबीहूद से नहीं) से होती हुई जरूब्बाबिल तक पहुंचती है। और लूका 27–31 में यह वंशावली जरूब्बाबिल से प्रारम्भ होकर नातान (सुलैमान से नहीं) के द्वारा दाऊद तक पहुंचती है और लूका 3:28–37 में अब्राहम से लेकर आदम तक लगभग इस वंशावली के सारे महत्वपूर्ण नायकों के नामों को जिक्र किया जाता है। अतः लूका यह कहते हुए समाप्त करता है कि यीशु संसार के सारे लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

लूका में पायी जाने वाली वंशावली कुछ निम्नलिखित कारणों से युसुफ की वंशावली न होकर मरियम की वंशावली थीः

- लूका ने बड़ी सावधानी के साथ यीशु के जन्म से सम्बन्धित हुई घोषण से जुड़ें तथ्यों को खोजा, अर्थात यीशु के जन्म व उसकी वंशावली के तथ्यों को(लूका अध्याय 1–3)।
- जिब्राएल फरिश्ते ने मरियम को बताया कि यीशु युसुफ का पुत्र नहीं होगा, लेकिन वह मरियम का शारीरिक पुत्र कहलाएगा, जिसके लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से कुंवारी द्वारा बच्चा जनने का चमत्कार होगा(लूका 1:26–37)। जिब्राएल ने यह भी कहा कि यीशु दाऊद के सिंहासन का वारिस होगा, लेकिन अनोखी बात यह होगी कि वह अन्तिम राजा होगा और उसका राज्य कभी खत्म न होगा(लूका 3:32)
- महायाजक जर्कयाह ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यह भविष्यवाणी की कि यीशु आने वाला प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्ता अर्थात मसीह होगा जो दाऊद के घराने में जन्म लेगा(लूका 1:69)। क्योंकि इस्राएल के कानून के हिसाब से स्त्री भी कानूनी वारिस बन सकती थी(गिनती 27:8), इस कारण से मरियम का दाऊद की वंशावली में अति महत्वपूर्ण स्थान है।
- बाइबल में वंशावली का जिक्र करते समय केवल अति महत्वपूर्ण नामों का ही जिक्र किया गया है उस पंक्ति में आने वाले बाकि नामों को छोड़ दिया गया है। उदाहरण के लिए मत्ती अपनी वंशावली में योराम औरर उज्जियाह के बीच में राजा अहज्जियाह,(अथालियाह),योआश और अमाजियाह को छोड़ देता है (मत्ती 1:8–9)। अतः 'का पिता'' का अर्थ ''का दादा'' या 'का परदादा'' भी हो सकता है, क्योंकि उस वंशावली के महत्वहीन लोगों को नज़अन्दाज़ कर दिया गया है। मत्ती ने दाऊद और जरूब्बाबिल के बीच 17 नामों का जिक्र किया था, जबकि लूका ने 23 नामों का। यहां तक कि लूका भी बहुत सी पीढ़ियों का जिक्र करना भूल गया है। उसने दाऊद से लेकर आदम तक कवेल 34 नामों का ही जिक्र किया, कि 850 वर्षों का लेखा होने के हिसाब से काफी कम नाम हैं।
- इसके अलावा अभिव्यक्तिः"आदम, पमरेश्वर का पुत्र" बिल्कुल समझ में नहीं आती है(लूका 3:38)।
- उसी तरीके से यह वाक्य भीः ''यीशु, युसुफ का पुत्र था, जैसा कि समझा जाता था, हेली का पुत्र था'' (लूका 3:23) ठीक वाक्य नहीं है। यहां पर भी एक पीढ़ी छूट गयी है। अतः युसुफ सम्भवतः हेली का दामाद था,जिसका अर्थ हुआ कि मरियम हेली की बेटी थी।लेकिन वंशावली में पुरूषों के वंश को ही स्थान दिया जाता था महिलाओं का नहीं इस कारण युसुफ का नाम वंशावली में लिखा गया जो मरियम का पति था।
- यहूदी तालमुद मरियम को ''हेली की पुत्री बुलाते हैं''। यह तभी संभव हो सकता है जब लूका के द्वारा लिखी गयी वंशावली मरियम की वंशावली हो। एक साइनिटिक–सीरीयन हस्तलिपि में लूका 2:4 का इस तरह से अनुवाद किया गया हैःक्योंकि वे(युसुफ और मरियम) दाऊद के घराने व पीढ़ी से सम्बनध रखते हैं। इस कारण लूका 3:23 के

हिसाब से ''युसुफ को हेली का दामाद माना जाना चाहिए'',जबकि मत्ती 1:16 में लिखा है कि युसुफ,याकूब का बेटा था।

निष्कर्ष। अतः मत्ती यीशु की वंशावली उसके पिता युसुफ से होकर प्रस्तुत करते हैं, लेकिन लूका यीशु की वंशावली को उसकी माता यीशु के माध्यम से होकर प्रस्तुत करते हैं।

इस तरह से देखा जाए तो यीशु मसीह शारीरिक तौर पर ''अब्राहम के पुत्र'''दाऊद के पुत्र'' और 'मरियम के पुत्र हैं'' क्योंकि उसे उसका मानवीय स्वभाव अब्राहम, दाऊद और मरियम से ही प्राप्त हुआ था(मत्ती1:1,16)। इस प्रकार से अदृश्य व अनन्त परमेश्वर ने संसार के इतिहास व अपनी प्रत्यक्ष सृष्टि में कदम रखा।

लेकिन यीशु मसीह परमेश्वर का शारीरिक पुत्र नहीं था वरन वह उसके द्वारा उत्पन्न पुत्र था।(यूहन्ना 1:14,18; 3:16,18)।

हम पहले वर्णन करेगें: उत्पन्न करना(पैदा करना, बनाना, किसी का पिता बनना)' या 'जन्म देना'(गेनाओ)
उसके बाद हम वर्णन करेगें: 'इकलौता पुत्र'(ग्रीकः मोनोजेनस) और अन्त में : त्रीएकता।

ग्रीक शब्द 'गेनाओ' के छः मतलब हैं:

(1) शारीरिक भाव में पिता बनना। शारीरिक बेटा पैदा करना।

- शारीरिक रूप में उत्पन्न करना–मनुष्य द्वारा बोला गया। वंशावली में देखें: सक्रिय क ने ख को उत्पन्न किया (उत्पत्ति 4:18)। उदासीनः ''उसमें क्या प्रजनन हुआ/गर्भधारण हुआ''(मत्ती 1:20); ''एक पुरूष द्वारा बीज पड़ना या गर्भधारण होना''; ''व्यभिचार द्वारा प्रजनन या गर्भधारण नहीं'(विवाह के रिश्ते के बाहर नहीं) (यूहन्ना 8:41); 'पाप में उत्पन्न''(यूहन्ना 9:34)।

- शारीरिक रूप में उत्पन्न–पवित्र आत्मा की सहायता से उत्पन्न। लूका 1:35 में लिखा है: 'पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।''पवित्र आत्मा ने कुंवारी मरियम पर ईश्वरीय प्रभाव डाला और उसमें केवल यीशु के शरीर की रचना की। उसने यीशु मसीह के ईश्वरीय स्वभाव की रचना नहीं की,क्योंकि उसका ईश्वरीय स्वभाव तो अनन्त है। अनन्त परमेश्वर एक मनुष्य के शरीर में मनुष्यों के बीच में पैदा हुआ और उसे 'यीशु' नाम दिया गया। यीशु ने अपनी मां से अपने मानवीय स्वभाव को प्राप्त किया अपने पिता से नहीं। दूसरे मनुष्यों के समान यीशु किसी शरीर की सहायता से उत्पन्न नहीं हुए थे, क्योंकि परमेश्वर की कोई देह नहीं है।

(2) आत्मिक भाव(प्रतीकात्मक) में पिता बनना। आत्मिक बच्चे पैदा करना।

- आत्मिक रूप से पैदा होना–मनुष्य के प्रभाव से। पौलुस कुरिन्थियों की पुस्तक में लिखता है: "इसलिए कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता(अर्थातः मैंने तुम्हें जन्म दिया है) हुआ''(1 कुरिन्थियों 4:15)इस अर्थ पौलुस उन्हें सुसमाचार सुनाने के द्वारा उनका पिता बन गया।

- आत्मिक रूप से पैदा होना –पवित्र आत्मा के प्रभाव से। जब लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं तो वे ''परमेश्वर के द्वारा जन्म पाते हैं''(ग्रीकः ek theou egennethesan)(यूहन्ना 1:13; 1यूहन्ना 2:29; 3:9; 4:7;5:1,4,18); या ऊपर से पैदा हुआ' (यूहन्ना 3:3); या ' आत्मा से जन्मा' (यूहन्ना 3:5)। पवित्र आत्मा उनके नये जन्म का मूल व कारण है। 'हर एक जन जो विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है वह परमेश्वर से जन्मा है। (उसे परमेश्वर द्वारा नयी आत्मिक सृष्टि के रूप में जन्म दिया गया है)(जिसे परेमश्वर ने उत्पन्न भी कहा गया है) (1 यूहन्ना 5:1)। "और हर एक जन जो उत्पन्न करने वाले को प्रेम करता है(आत्मिक जीवन को नयी सृष्टि के रूप में)(जिसे पिता कहा गया), जो उससे उत्पन्न हुआ है उसे भी प्रेम करता है''(निश्चित काल)(जिसे पुत्र कहा जाता है)(1 यूहन्ना 5:1)। इसे यीशु मसीह से जोड़कर देखा जा सकता है लेकिन सम्भवतः इसे मसीही भाइयो के लिए कहा गया है(1 यूहन्ना 2:9–10)

1 "दाऊद के वंश से जन्मा" (ग्रीकः गीनोमाई=पैदा होने वाला)(रोमियों 1:3)
2 "स्त्री से उत्पन्न" (ग्रीकः गीनोमाई =पैदा होने वाला)(गलातियों 4:4)

(3)अनोखे भाव में पिता बनना। अनन्त पिता(अभौतिक व सत्तामूलक) बनना(मानना व स्वीकार)(अभौतिक व सत्तामूलक पुत्रत्व)

पवित्र आत्मा के प्रभाव द्वारा यीशु मसीह के पुनरूत्थान,स्वर्गारोहण व राज्याभिषेक पर, परमेश्वर का पुत्र इस धरती पर अपनी सर्वश्रेष्ठ *शक्ति का इस्तेमाल करने लगा,* और उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में *स्वीकार किया जाने लगा,* जिसके पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार था (मत्ती 28:18; रोमियों :4; प्रकाशितवाक्य 1:5–6)। इस घटना पर परमेश्वर ने कहा, ''तू मेरा पुत्र है; आज से मैं तेरा पिता हूँ"(इब्रानियों 1:5, भजन 2:7)। यीशु मसीह अपने प्रथम आगमन से पहले(यूहन्ना 3:16; इब्रानियों 1:6) और अनन्तकाल से ही परमेश्वर का पुत्र था(यूहन्ना 17:1–5), लेकिन उसने अपनी मृत्यु(जहां उसने पापों के लिए प्रायश्चित किया) , उसके पुनरूत्थान (मृतकों में से), उसके स्वर्गारोहण (स्वर्ग पर) और उसके राज्याभिषेक (परमेश्वर के सिंहासन पर)के पश्चात परमेश्वर के पुत्र होने के अपने सम्पूर्ण अधिकार का इस्तेमाल करना प्रारम्भ कर दिया। (इब्रानियों 1:8–9)

(4) शारीरिक भाव में एक माता बनना(जन्म देना)।

''उसने एक पुत्र को जन्म दिया'' (लूका 1:57)। "स्त्री बच्चे को जन्म देती है"(यूहन्ना 16:21)। "इस कारण मैं पैदा हुआ"(यूहन्ना 1:37)। ''वह अपनी भाषा के लोगों में जन्मा" (प्रेरितों 2:8)। ''मैं एक रोमी नागरिक के रूप में पैदा हुआ'' (प्रेरितों 22:28)।

(5) आत्मिक भाव(प्रतीकात्मक) में माता बनना।

सिय्योन पर्वत की वाचा (हाज़िरा) " गुलाम होने वाले बच्चों को जन्म देती है", जो पाप व व्यवस्था के गुलाम होते हैं (गलातियों 4:24–5; गलातियों 3:21–23)

(6) उत्पन्न करना या उसकी वजह बनना।

"मूर्खता और अविद्या के विवादों से झगड़े उत्पन्न होते हैं।" (2 तीमुथियुस 2:23)।

ग्रीक शब्द 'मोनोगेन्स का अर्थ है 'इकलौता–बेटा'।

यूहन्ना 1:18 में यह पद किसी मानवीय सम्बन्ध को नहीं प्रगट करता है। यह भूतकाल में होने वाली शुरूआत को नहीं दर्शाता। यह पद केवल मसीह के त्रीएक पुत्रत्व को प्रगट करता है।

(1) इकलौते–पुत्र को यीशु के मानवीय स्वभाव से नहीं जोड़ा जा सकता।

"इकलौते–पुत्र'' शब्द से जोड़कर यह नहीं कहा जा सकता कि यीशु परमेश्वर का शारीरिक इकलौता पुत्र था,क्योंकि वह मानव का रूप धारण करने से पहले ही परमेश्वर को इकलौता पुत्र था (यूहन्ना 3:16)। अतः''इकलौते पुत्र'' का इस सृजे गये संसार से कोई ताल्लुक नहीं है। एकमात्र इकलौता–पुत्र सृष्टि से ऊपर है।

(2) इकलौता–पुत्र यीशु के मसीह होने के कार्यकाल के प्रारम्भ को नहीं दर्शा सकता।

इकलौता–पुत्र शब्द 'केवल'(ग्रीकः मोनोस) व 'पीढ़ी'(ग्रीकःमोनोस, जो ग्रीक शब्द गीनोमाई से लिया गया है, जिसका अर्थ 'पैदा होना'' होता है) से नहीं लिया गया है, क्योंकि यीशु मानव जाति में पैदा हुआ अनोखा जन है। यीशु 'परमेश्वर' है(यूहन्ना 1:1) और वह 'इकलौता उत्पन्न परमेश्वर है' (यूहन्ना 1:18 ग्रीक भाषा में बेहतर ढंग से लिखा गया है)। और क्योंकि परमेश्वर अनन्त है इसलिए 'इकलौते पुत्र'को किसी शुरूआत से नहीं जोड़ा जा सकता। मानवीय इतिहास में यीशु के मसीह के रूप में लक्ष्य की उसके जन्म के साथ शुरूआत तथा उसके दूसरे आगमन के साथ अन्त है। अतः 'इकलौते पुत्र' को यीशु के मसीह होने के कार्यकाल अर्थात समय से नहीं जोड़ा जा सकता । इकलौता पुत्र समय से परे है।

(3) इकलौते पुत्र को केवल त्रीएकता में यीशु के पुत्रत्व के रूप से जोड़कर देखा जा सकता है।

क्योंकि इकलौता पुत्र किसी ऐसी चीज़ की ओर ईशारा करता है जो सृष्टि और समय से परे है, इसका अर्थ हुआ कि :'वह अपनी किस्म का अनोखा है' या 'अपनी श्रेणी में 'इकलौता' है'! इसी कारण से एन आई वी अनुवाद में 'इकलौता' को 'एक मात्र' परमेश्वर का पुत्र करके अनुवाद किया गया है। अभौतिक व सत्तामूलक भाव से यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है–उसका स्वभाव ईश्वरीय है। यीशु मसीह परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1; रोमियों 9:5; कुलुस्सियों 2:9; तीतुस 2:13; इब्रानियों 1:8; 1 यूहन्ना 5:20; प्रकाशितवाक्य 1:8,17–18;2:8; 22:13) वह अनन्त काल के लिए परमेश्वर है।

त्रीएकता।

(1) परमेश्वर को केवल यीशु ने ही प्रगट किया है।
सारे संसार में कोई भी जन या धर्म ऐसा नहीं है जो परमेश्वर पिता को जानता है केवल यीशु मसीह व उन लोगों को छोड़कर जिन पर यीशु ने पिता को प्रगट का चुनाव किया हो(मत्ती 11:27; यूहन्ना 10:15 17:25–26)! अतः हर एक मनुष्य यीशु मसीह अर्थात परमेश्वर के पुत्र के साथ अपने सम्बन्ध को ध्यान में रखते हुए उसका आदर करता है (मत्ती 10:40; लूका 10:16; लूका 2:34; 1 पतरस 2:6–8)।

(2)परमेश्वर के तीन भिन्न रूप।
केवल *एक ही परमेश्वर* है(मरकुस 2:29) और उसका *एक ही नाम है*(मत्ती 28:19)। फिर भी वह एक परमेश्वर बाइबल में अपने आप को परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट करता है। (मत्ती 28:19; 1 कुरिन्थियों 8:6; इफिसियों 4:3–6)। उसने अपने आप ही इस बात को हम पर प्रगट किया है कि उसकी *ईश्वरीयता में भी आन्तरिक भिन्नता है*। यहां पर आकर बातें हमारी समझ से परे हो जाती हैं, और हमें ज़रूरत पड़ती है कि हम बाइबल में प्रकाशित परमेश्वर के प्रकाशनों के प्रति समर्पित हो जाएं अर्थात उस पर विश्वास करें। अनन्त काल ही से परमेश्वर पिता परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा का अनोखा रिश्ता है।

'त्रीएकता 'शब्द बाइबल आधारित नहीं है परन्तु यह ईश्वरीय ज्ञान सम्बन्धी शब्द ज़रूर है तो दर्शाता है कि मसीही लोग एक परमेश्वर पर, एक ईश्वरीय शक्ति पर विश्वास करते हैं जिसने अपने आप को तीन रूपों में प्रगट किया है। लैटिन भाषा में ''रूप' को प्रस्तुत करने के लिए 'व्यक्ति' शब्द का इस्तेमाल किया गया है।लेकिन आधुनिक भाषा में 'व्यक्ति' शब्द का अर्थ 'एक वैयक्तिक जीव' माना जाता है लेकिन मूल लैटिन शब्द का अर्थ यह नहीं था।

मूल ग्रीक या यूनानी भाषा के शब्द 'पॉस्टिस'' का अर्थ ' अनिवार्य स्वभाव, निचोड़ या वास्तविक जीव' होता है, जिसे 'रूप' को प्रदर्शित करने के लिए इस्तेमाल किया गया। यह शब्द कभी किसी अलग व्यक्तित्व का बोध नहीं कराता बल्कि वह ईश्वरीयता में विद्यमान भिन्नता को प्रगट करता है! वह बताता है कि एक परमेश्वर ने अपने आप को अपनी सृष्टि व मानव इतिहास में (परमेश्वर) स्वर्गीय पिता(परमेश्वर) स्वर्ग में पुत्र (यूहन्ना 17:5) तथा धरती पर मनुष्यों के बीच में पवित्र आत्मा (परमेश्वर)के रूप में प्रगट किया।

बाइबल हमारे सामने यीशु और परमेश्वर को अलग करके प्रगट नहीं करती, वरन एक परमेश्वर को प्रगट करती है जिसने अपने आप को स्वर्गीय परमेश्वर व धरती पर भी 'परमेश्वर हमारे साथ है''के रूप में प्रगट किया। त्रीएक परमेश्वर सर्वव्यापी परमेश्वर है।

(3) परमेश्वर पिता,परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा एक ही परमेश्वर हैं।
मसीहियों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दिया जाता है"(मत्ती 28:19)। दिये गये ''नाम' एकवचन हैं, बहुवचन नहीं। परमेश्वर का एक नाम दर्शाता है कि वह एक परमेश्वर है, एक ईश्वरीय जीव(व्यवस्थाविवरण 6:4)। ''पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा'' प्रगट करते हैं कि ईश्वरीय एकता के भीतर एक भिन्नता पायी जाती है। वही एक ईश्वर अपने आपको परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट करता है। पिता,पुत्र व पवित्र आत्मा एक हैं तथा उनका स्वभाव समान है।

(4) पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के काम अलग अलग हैं:
'परमेश्वर पिता के रूप में' बाइबल का परमेश्वर अनन्त परमेश्वर है, सृष्टि का रचयिता तथा हर चीज़ व हर व्यक्ति का मूल है जो हर चीज़ या हर व्यक्ति की मंजिल को तय करता है (रोमियों 11:36)। वह ही सृष्टि, प्रकाशन तथा विश्राम को बनाने वाला है। पिता होने के नाते वह स्वर्ग और पृथ्वी पर अपने परिवार का मुखिया है (इफिसियों 3:14–15), वह पिता जिसके साथ उसके आत्मिक सन्तानों का व्यक्तिगत तथा घनिष्ठ आत्मिक सम्बन्ध है (मत्ती 6:9–13)।

''परमेश्वर के पुत्र'' के रूप में बाइबल के परमेश्वर ने अपने ईश्वरीय स्वभाव को अलग किया बिना मानव इतिहास में कुंवारी मरियम के द्वारा मनुष्य का रूप धारण किया(फिलिप्पियों 2:6–7;कुलुस्सियों 2:9)। वह ''परमेश्वर हमारे साथ'' है(यशायाह 7:14; मत्ती 1:23)। वह 'परमेश्वर का वचन' है जो जगत के मानवीय इतिहास में प्रगट हुआ–एक व्यक्ति जिसने प्रत्यक्ष रूप में परमेश्वर को प्रगट किया तथा मनुष्य को परमेश्वर के वचन सुनाए(यूहन्ना 1:1,14,18)। कैल्सेडोन की चौथी परिषद के अनुसार (451 ई. पश्चात)यीशु मसीह का ईश्वरीय व मानवीय स्वभाव, 'अमिश्रित, अटल,अविभाजित,अटूट' है। श्रेष्ठ नियमों व मान्यता (मत्ती 11:27), आदर (यूहन्ना 5:23), शक्ति(यूहन्ना 1:3; 5:21, 27) उसमें जीवन बिताने (यूहन्ना 5:26), कार्य के(यूहन्ना 10:30), सम्पत्ति (यूहन्ना 16:15) हिसाब से परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर पिता के समान है। उसका ईश्वर का पुत्र होने का दावा करने पर ही, यीशु मसीह को मृत्यु दण्ड दिया गया था(यूहन्ना 10:30,33; मत्ती 26:63–66)।

और पवित्र आत्मा के रूप में परमेश्वर धरती के लोगों के हृदय और जीवन में (रोमियों 8:9–10; 1 कुरिन्थियों 19–20) तथा मसीही कलीसिया के बीच में (इफिसियों 2:19–22)वास करता है।

एक छोटे से उदाहरण के रूप में हम 'आग'(सूर्य) को देखते हैं। आग (सूर्य) हमारे जीवन का आवश्यक भाग है, लेकिन उसके अस्तित्व के तीन मुख्य रूप हैं: आग अर्थात सूर्य विद्यमान है, हम उसे ज्योति के समान देख सकते हैं और हम उससे गर्मी को प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार से परमेश्वर विद्यमान है (सारे जगत में एकमात्र ईश्वरीय शक्ति के रूप में), वह यीशु मसीह के द्वारा अपने आप को धरती पर प्रगट करता है और पवित्र आत्मा के रूप में अप्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं।

(5) यीशु मसीह व पवित्र आत्मा को परमेश्वर कहा गया।
परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा का समान स्वभाव होने के कारण, यीशु मसीह को 'परमेश्वर हमारे संग' (मत्ती 1:23),' परमेश्वर का पुत्र'(मत्ती 26:63–64) और 'परमेश्वर ' भी कहा गया (यशायाह 9:6; यूहन्ना 1:1;रोमियों 9:5; 20:28; तीतुस 2:13; इब्रानियों 1:8–9)। और इसी कारण पवित्र आत्मा को भी''परमेश्वर का आत्मा'',''मसीह का आत्मा'', 'आप में मसीह'' (रोमियों 8:9–10) और 'परमेश्वर '(प्रेरितों 5:3,5) भी कहा गया।

निष्कर्ष। ''परमेश्वर का पुत्र'' केवल यीश मसीह के पुत्रत्व को प्रगट करता है जिसकी कोई शुरूआत नहीं है। यीशु मसीह अभौतिक, सत्तामूलक त्रीएकत्व और अनन्त भाव में परमेश्वर के पुत्र हैं। अनन्त व अदृश्य परमेश्वर ने कुंवारी मरियम के द्वारा मनुष्य का रूप धारण करके प्रत्यक्ष परमेश्वर के रूप में अपने आपको प्रगट करते हुए धरती पर कदम रखा।

10.यीशु मसीह ने अपने आप को 'मनुष्य का पुत्र' कहा।

मनुष्य के पुत्र लोगों का सम्बन्ध

पुराने नियम में 'मनुष्य के पुत्र' का सामान्य अर्थ मनुष्य था(भजन 8:4)। यहेजकेल भविष्यवक्ता के अनुसार, यह मनुष्य की सारी कमज़ोरियों और निर्भरताओं को प्रगट करता है(यहेजकेल 2:1,3,6,8;3:1,4,10,17,25 इत्यादि)। इसी प्रकार से 'दुष्टता की सन्तान'(2शमूएल3:34)का अर्थ ''दुष्ट लोगों'' से है, ''परदेशियों के पुत्र'' (निर्गमन 12:43) का अर्थ परदेशियों से है;' बिजली का पुत्र'' (मरकुस 3:17) का अर्थ 'उत्तेजना पूर्ण मनुष्य से'' है। इसी प्रकार से ''संगीत की बेटी' (सभोपदेशक 12:4) को अर्थ संगीत के स्वरों से है।

मनुष्य के पुत्र से मसीह का सम्बन्ध

(1) दानिय्येल 7:9–14 में ''मनुष्य के पुत्र का वर्णन'' सुसमाचार में मसीह की उपाधि बन गयी।

(यूहन्ना 12:34को छोड़कर) सुसमाचार के हर मामले में, इस उपनाम को यीशु मसीह ने अपने लिए इस्तेमाल किया। मत्ती 26:64 की तुलना दानिय्येल 7:13 से करें। केवल स्तिफनुस ने ही यह कहा कि वह मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिने पर खड़ा हुआ देखता हूँ (प्रेरितों 7:56)। इसके अलावा उसके बारे में सम्बोधित करते हुए किसी बात को नहीं सुना गया। प्रकाशितवाक्य 1:13 व 14:14 यीशु के मसीह, उद्धार और न्याय के मध्यस्थ,के रूप में कार्य करने के सम्बन्ध में ''मनुष्य का पुत्र' का इस्तेमाल करता है।

(2) 'मनुष्य का पुत्र' उपनाम कई अनुच्छेदों में मसीह की दीनता को प्रगट करता है

उसके पास अपना कोई स्थाई घर नहीं था (मत्ती 8:20), वह अपने जीवन में बहुत से कष्टों को सहने पर था(मत्ती12:12,)उसे धोखा देकर मृत्यु दण्ड मिलने वाला (मत्ती 26:24) और दफन किया जाने वाला था (मत्ती 12:40)।

(3) 'मनुष्य का पुत्र' उपनाम कई अनुच्छेदों में मसीह को सम्मान प्रदान करता है।

वह मृतकों में से जी उठेगा(मत्ती 17:9), जिस तरह से वह धरती को छोड़कर गया ठीक इसी प्रकार एक दिन वह स्वर्गदूतों के साथ अपनी पिता की महिमा में वापस आयेगा (मत्ती 16: 27; 24:27,30,44) और एक न्यायी के रूप में अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा(मत्ती 25:31;26:64)।

(4) 'मनुष्य का पुत्र' उपनाम कभी यीशु को महज़ एक मनुष्य के रूप में नहीं दर्शाता, परन्तु मनुष्य का रूप धारण करने वाले परमेश्वर के रूप में प्रगट करता है।

मनुष्य का पुत्र व्यवस्था का परमेश्वर है (सब्त) (मत्ती 12:8)। मनुष्य का पुत्र को इस धरती पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (मत्ती 9:6)। मनुष्य का पुत्र इस मकसद के साथ दुनिया में आया कि वह बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने

प्राण दे (मत्ती 20:28)। मनुष्य का पुत्र खोये हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया (लूका 19:10)। मनुष्य का पुत्र फिर से मृतकों में से जी उठेगा (मरकुस 10:33–34)। यशायाह 42:1–7;यशायाह 49:1–8; यशायाह 52:13–53:12 में 'परमेश्वर के दास' की तुलना करें (इब्रानीः आबेद याहवेह)।

(5) यहूदियों सामने इस उपनाम का इस्तेमाल यहूदियों के बीच में करने के द्वारा, यीशु ने अपने आप को अचानक से नहीं परन्तु धीरे–धीरे प्रगट किया।

यदि उसने एकदम जाकर अपने आप को मसीह कह दिया होता, तो शायद वह उसे स्वीकार कर लेते। लेकिन अब यहूदी सोचने लगे कि, ''यह मनुष्य का पुत्र कौन है''?(यूहन्ना 12:34)

यीशु उनके और हमारे सामने चुनौति रखता हैः ''तुम मसीह के बारे में क्या सोचते हो?वह किसका पुत्र है?(मत्ती 22:42)।